

श्रीमती कमला राठौड़ का संगीत के क्षेत्र में योगदान

पुष्पा

(सहायक आचार्य संगीत कंठ)

चौ. बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर (राज0)

शोध-आलेख सार

यह शोध आलेख राजस्थान की प्रख्यात शास्त्रीय संगीतज्ञ एवं शिक्षाविद् श्रीमती कमला राठौड़ के सांगीतिक जीवन पर आधारित है। शास्त्रीय संगीत के रूप में उन्होंने संगीत शिक्षा, शोध तथा भारतीय शास्त्रीय परंपरा के संवर्धन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उनका संगीत न केवल सुर-ताल की मर्यादा का परिचायक है, बल्कि वह नई पीढ़ी को भारतीय सांगीतिक परंपरा से जोड़ने का सशक्त माध्यम भी बना। यह अध्ययन उनके शिक्षकीय जीवन, मंचीय प्रस्तुतियों, गायन शैली, संगीत चिंतन तथा उनके द्वारा प्रशिक्षित विद्यार्थियों के माध्यम से फैले प्रभाव को रेखांकित करता है।

मुख्य शब्द

शास्त्रीय संगीत, संगीत शिक्षा, गायन शैली, भारतीय सांगीतिक परंपरा, संगीत प्रशिक्षण

परिचय

भारतीय शास्त्रीय संगीत केवल रागों और तालों की एक संरचना मात्र नहीं है बल्कि यह आत्मा से आत्मा तक की यात्रा है। इस अलौकिक साधना को जीवन का आधार बनाकर जिन विभूतियों ने इसे जन-जन तक पहुँचाया है उनमें श्रीमती कमला राठौड़ का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। आपका जन्म 3 अगस्त 1942 को सूर्य नगरी जोधपुर के पोकरण के जमींदार परिवार में हुआ। आपके पिता ब्रिटिश राज्य में न्यायिक मजिस्ट्रेट के पद पर प्रतिष्ठित थे। सुशिक्षित माता से आपको प्रारम्भिक ज्ञान व संस्कार मिले।

सांगीतिक जीवन की शुरुआत (गुरु एवं संगीत शिक्षा)

इन्होंने बाल्यावस्था में राजपूत परिवेश होने के कारण संगीत शिक्षा घर पर ही आरंभ की। जो पोकरण के ही गायक श्री धनीराम जी से आरंभ की गयी। जो संगीत शिक्षक भी थे। इसके अतिरिक्त उन्हीं के घरानों के अन्य कलाकारों से कत्थक, वायलिन व बांसुरी की भी शिक्षा ली। जोधपुर विश्वविद्यालय से एम.ए हिन्दी(1964), राजस्थान विश्वविद्यालय (वनस्थली विद्यापीठ) से एम.ए कंठसंगीत (1966) में विश्वविद्यालय में द्वितीय स्थान एवं अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय मंडल बम्बई से कंठ संगीत एवं सितार वादन में संगीत विशारद की उपाधि प्राप्त की। स्नातकोत्तर संगीत शिक्षा ग्वालियर घराने के प्रोफेसर पदमश्री डॉ. बी.आर. देवधर जो पं. विष्णु दिगम्बर प्लुस्कर जी के प्रत्यक्ष शिष्य थे, से प्राप्त करने का सौभाग्य मिला। आप समर्पित शास्त्रीय संगीतज्ञ होने के साथ-साथ एक उत्कृष्ट संगीत शिक्षिका भी रही हैं। उन्होंने अपने संपूर्ण जीवन को संगीत के प्रचार संरक्षण और विद्यार्थियों को प्रशिक्षण देने में समर्पित कर दिया। उनका गायन भावप्रधान, रागदारी की शुद्धता

से युक्त और गुरु-शिष्य परंपरा के मूल्यों पर आधारित रहा है। उनका योगदान केवल एक संगीतज्ञ तक सीमित नहीं बल्कि एक मार्गदर्शक प्रशिक्षक और प्रेरणादायी व्यक्तित्व के रूप में भी स्थापित है। श्रीमती कमला राठौड़ का संगीत से जुड़ाव प्रारंभ से ही गहरा रहा।

राजस्थान की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और पारिवारिक वातावरण में संगीत के प्रति उनकी रुचि बचपन से ही विकसित हुई। उन्होंने अपनी प्रारंभिक संगीत शिक्षा स्थानीय गुरुजनों से प्राप्त की, और बाद में उच्च स्तरीय शास्त्रीय प्रशिक्षण के लिए प्रतिष्ठित संस्थानों का रुख किया। यहीं से उनके भीतर रागों की सूक्ष्मता, स्वर की शुद्धता और गायन की संवेदना ने परिपक्व रूप लिया। उनकी विधिवत संगीत शिक्षा किसी विशिष्ट घराने से नहीं बंधी परंतु उन्होंने कई दिग्गज संगीताचार्यों से शिक्षा पाकर विविध शैलियों का समावेश अपने गायन में किया। उनकी गायन शैली में खयाल ठुमरी दादरा तराना जैसी विविध विधाओं का सुचारु संतुलन देखा जा सकता है।(1)

शिक्षण कार्य एवं अकादमिक योगदान

श्रीमती कमला राठौड़ ने एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय के संगीत विभाग में लंबे समय तक अध्यापन किया। वर्ष 1966 में सनातन धर्म राजकीय महाविद्यालय, ब्यावर में संगीत विषय का शुरुआत किया व लगभग डेढ़ वर्ष संगीत अध्यापिका के रूप में अस्थाई कार्य सेवा कर संगीत विभाग का आरंभ किया। 19 सितम्बर 1973 को राजस्थान लोक सेवा आयोग से चयनित होकर चौधरी बल्लूराम गोदारा राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर के संगीत विभाग के गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित हो अगस्त 2000 तक सतत कार्यरत रही। वहाँ उन्होंने स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को भारतीय शास्त्रीय संगीत की जटिलताओं को सरल ढंग से समझाने का कार्य किया। उनके अध्यापन की विशेषता यह रही कि वे केवल राग-संगीत तक सीमित नहीं रहीं बल्कि संगीत के इतिहास सौंदर्यशास्त्र संगीत मनोविज्ञान और भारतीय संगीतशास्त्र की पारंपरिक अवधारणाओं को आधुनिक संदर्भों से जोड़ने का प्रयास करती रहीं।(2)

प्रस्तुतियाँ सम्मान एवं सांगीतिक प्रभाव

श्रीमती कमला राठौड़ का संगीत केवल कक्षा तक सीमित नहीं रहा। उन्होंने अनेक मंचों पर अपनी प्रस्तुति दी जिनमें विश्वविद्यालयीय सांगीतिक संध्याएं, संगीत समारोह शास्त्रीय संगीत की कार्यशालाएँ तथा आकाशवाणी एवं दूरदर्शन जैसे माध्यम शामिल हैं। उनके गायन की सबसे प्रमुख विशेषता रही सरलता में गहराई। उन्होंने रागों की जटिलता को इस तरह प्रस्तुत किया कि श्रोता उस सौंदर्य को सहजता से महसूस कर सके। राग पूरिया कल्याण, मेघ मल्हार व बिलावल आदि में उनकी प्रस्तुतियाँ विशेष सराहना प्राप्त करती रहीं।

आपके द्वारा किये कार्यों के लिए कई संगीत संस्थाओं के द्वारा आपको सम्मानित किया गया—

- वर्ष 2003— राष्ट्रीय कला मंदिर, श्रीगंगानगर
- वर्ष 2010— स्वरांजलि, रामदास जी हर्ष स्मृति
- वर्ष 2008— प्रशस्ति पत्र, सांस्कृतिक सहयोग समिति
- वर्ष 2010— शिक्षक सम्मान, रोटरी क्लब
- वर्ष 2012— संगीत गुरु सम्मान, शिक्षक सम्मान
- वर्ष 2019— भारत विकास परिषद्, श्रीगंगानगर

- वर्ष 2014— कला गुरु सम्मान, राजकीय कन्या महाविद्यालय, श्रीगंगानगर
- वर्ष 2022–2023— संगीत नाटक अकादमी, जोधपुर द्वारा “कला पुरोधा” सम्मान द्वारा सम्मानित किया गया।(3)
- अन्य उपलब्धियां— डॉ. लक्ष्मी कुमारी चुंडावत की अध्यक्षता में अजमेर में आयोजित लोकसंगीत के सेमिनार में डॉ. पी.एल मेनारिया जी की प्रेरणा से 67–68 में भाग लिया।
- वर्ष 1965–66 में पद्मश्री कोमल कोठारी द्वारा राजस्थानी लोक संगीत प्रबन्ध पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।
- वर्ष 2024, रामनवमी के दिन राजस्थान के लोकसंगीत से संबंधित आपके द्वारा लिखित एक पुस्तक “लोकगीत एवं उसका शास्त्रीय संगीत से संबंध” का विमोचन भी हुआ। जिसका प्रकाशन “साहित्यागार” चौड़ा रास्ता, जयपुर द्वारा किया गया।
- 1995 में प्रतापसिंह चौधरी के द्वारा लिखित पुस्तक “राजस्थान – संगीत एवं संगीतकार” पुस्तक में भी आपकी जीवनी प्रकाशित की गयी है। इस पुस्तक का प्रकाशन जयपुर प्रिन्टर्स प्राइवेट लिमिटेड द्वारा किया गया था।(4)
- आपके अंदर एक योग्य वाग्गेयकार होने के कारण आपने अनेक सुप्रसिद्ध रागों में शब्द रचना व स्वर रचना की है। जिनका प्रकाशन अखिल भारतीय गंधर्व महाविद्यालय से प्रकाशित पत्रिका “संगीत कला विहार” में किया गया है।(5)
- संगीत कार्यालय हाथरस से प्रकाशित होने वाली पत्रिका “संगीत” में अपने पुज्य गुरु बी.आर देवधर की स्मृति में एक संस्मरण लेख भी प्रकाशित किया।(6)
- अपने अधिकतर विद्यार्थियों का मार्गदर्शन कर जीविकोपार्जन के लिए योग्य बनाया व राजकीय सेवायें प्राप्त करने में सहयोग प्रदान किया।
- आपके द्वारा अपने विद्यार्थियों को आकाशवाणी जैसे मंच से भी जोड़ा गया।
- आकाशवाणी सूरतगढ़ की प्रारंभ से अब तक विभिन्न क्षेत्रों की मान्यता प्राप्त कलाकार के रूप में, चौपाल की ओर वार्ताकार के रूप में, विभिन्न विषयों में परिचर्चा की संयोजिका के रूप में, लोकसंगीत (राजस्थान) की कलाकार के रूप में, सुगम संगीत भजन, गीत व गज़ल गायिका के रूप में अपने उज्ज्वल नेतृत्व एवं वर्तमान में इनके लिए आपको अनुबंधित करना – आपके व्यक्तित्व की विशिष्ट उपलब्धियां है।
- श्रीगंगानगर जिले की संगीत संस्थाओं के विकास में आपकी प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष सहभागिता रही है। राष्ट्रीय कला मंदिर, रविन्द्र संगीत मंच, संगीत शिक्षण समिति आदि संगीत संस्थाओं से आप सदैव जुड़ी रही है। आपके व्यक्तित्ववाला लोक में सुर संगम, जयपुर की संगीत संबंधी संस्था के माध्यम से श्रीगंगानगर जिले की खुली जिला

स्तरीय, राज्य स्तरीय प्रतियोगिताएं आयोजित की गयी एवं राष्ट्रीय स्तर तक प्रथम प्रयास में श्रीगंगानगर को सर्वोच्च स्थान दिला कर गौरवान्वित किया।

- यू-ट्यूब चैनल पर देवधर संगीत संस्थान – श्रीमती कमला राठौड़ जी ने 24 जुलाई 2021, गुरु पूर्णिमा से इस चैनल का आरंभ, हिन्दूस्तानी संगीत के प्रसार आर प्रचार के लिए किया। आपके द्वारा स्वरचित बंदिशों एवं रचनाएं इस चैनल पर डाली गयी हैं, जिसे विद्यार्थी सुनकर समझकर अनुसरण कर सकता है। इस चैनल के द्वारा आपने पुराने व नये शिष्यों को जोड़ रखा है।(7)

निष्कर्ष

इन्होंने नारी सशक्तिकरण की दिशा में भी एक सशक्त भूमिका निभाई। एक महिला होते हुए शास्त्रीय संगीत जैसे पारंपरिक और पुरुष प्रधान क्षेत्र में स्वयं को स्थापित करना अपने आप में एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। उन्होंने यह सिद्ध किया कि पारिवारिक दायित्वों को निभाते हुए भी कोई महिला संगीत जैसी साधना में निपुणता प्राप्त कर सकती है। श्रीमती कमला राठौड़ का संपूर्ण सांगीतिक जीवन साधना, सेवा और समर्पण का प्रतीक है। एक शास्त्रीय संगीतज्ञ, शिक्षिका, शोध मार्गदर्शक और सांस्कृतिक संवाहक के रूप में उनका योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनकी गायन शैली, शिक्षण पद्धति और सांगीतिक दृष्टिकोण में गहराई, सौम्यता और अनुशासन का त्रिवेणी संगम देखने को मिलता है। नारी शक्ति का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने यह भी दर्शाया कि स्त्रियाँ किसी भी क्षेत्र में केवल सहभागी ही नहीं, बल्कि नेतृत्वकर्ता भी बन सकती हैं।

श्रीमती कमला राठौर न केवल शास्त्रीय संगीत की एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर हैं, बल्कि वे एक ऐसी प्रेरणास्रोत हैं जिन्होंने अनगिनत विद्यार्थियों के जीवन को सुरों की सौगात दी है। उनके संगीत में वह माधुर्य है, जो मन को छू जाता है और आत्मा को शांत करता है। उनकी वाणी में विनम्रता है, व्यवहार में सरलता और ज्ञान में गहराई। उन्होंने सिर्फ रागों की शिक्षा नहीं दी, बल्कि संगीत के माध्यम से अनुशासन, समर्पण और संस्कृति का पाठ पढ़ाया। उनके मार्गदर्शन में विद्यार्थियों ने संगीत को केवल एक कला नहीं, बल्कि एक साधना के रूप में अपनाया। कमला जी ने हर विद्यार्थी की प्रतिभा को पहचाना, उन्हें आत्मविश्वास दिया और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। उनके सिखाए हुए कई शिष्य आज देश-विदेश में संगीत के क्षेत्र में नाम कमा रहे हैं, जो उनकी तपस्या और समर्पण का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उनका यह योगदान न केवल सराहनीय है, बल्कि भावी पीढ़ियों के लिए एक आदर्श भी है। उनका जीवन संगीत के सुरों में रचा-बसा है और वे आज भी उसी समर्पण के साथ विद्यार्थियों को ज्ञान प्रदान कर रही हैं।

वंदनीय हैं आप,
आपके स्वर में संस्कार हैं।
आपके रागों में रस है,
और शिक्षण में उजास है।
गुरु-रूप में आपने

हर शिष्य को निखारा है,
संगीत की इस अमूल्य सेवा के लिए
हमारा कोटि-कोटि नमन स्वीकार करें।

संदर्भ

1. श्रीमती कमला राठौर द्वारा प्रदत्त साक्षात्कार
2. महाविद्यालय एवं संगीत विभाग के दस्तावेज
3. संगीत समारोहों की रिपोर्ट्स एवं कार्यक्रम पुस्तिकाएँ
4. "राजस्थान – संगीत एवं संगीतकार" पुस्तक– पृष्ठ संख्या–138
5. संगीत कला विहार (संस्मरण)– अप्रैल–1966, पृष्ठ संख्या–36, फरवरी–1966, पृष्ठ संख्या–13
6. संगीत पत्रिका (बंदिशों का प्रकाशन)– मार्च–1966–पृष्ठ संख्या–36
7. शिष्यों एवं सहकर्मियों से प्राप्त मौखिक जानकारी